राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं
पंचायती राज संस्थान
ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

www.nird.org.in

संख्या : 270

प्रगति

नवम्बर 2017

प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण | अनुसंधान और अनुप्रयोग विकास | नीति प्रयोजन और समर्थन | प्रौद्योगिकी अंतरण | शैक्षणिक कार्यक्रम

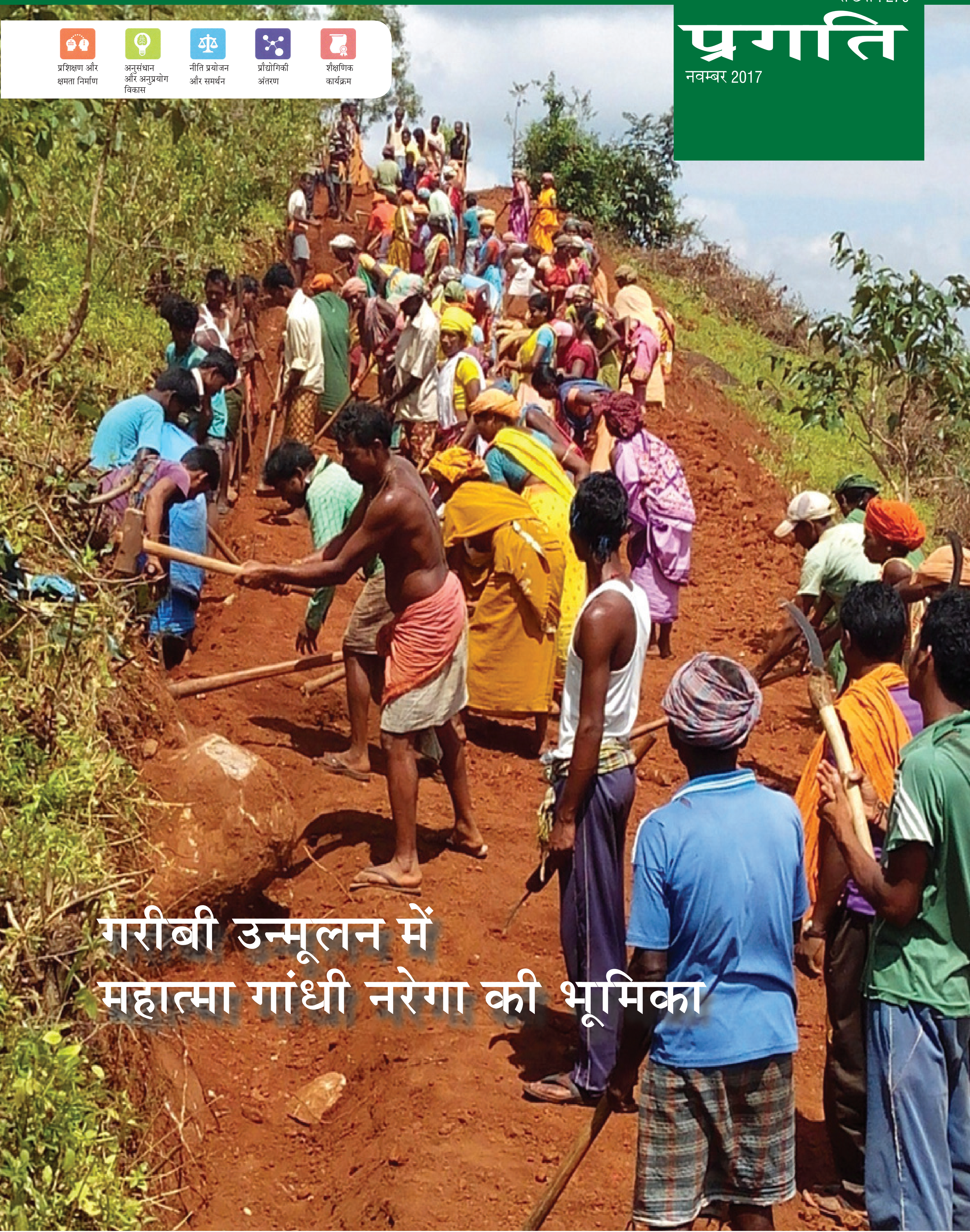

गरीबी उन्मूलन में महात्मा गांधी नरेगा की भूमिका

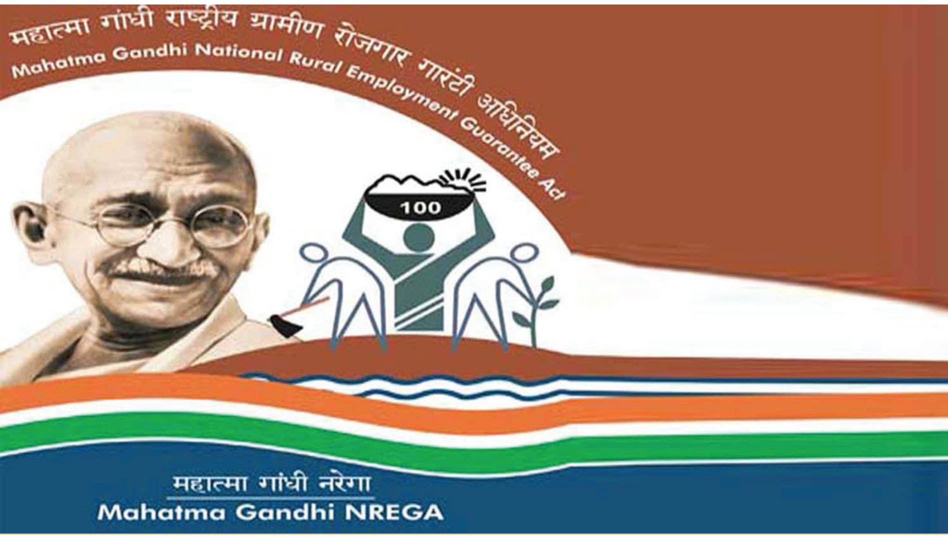

विषयक्रम

3 गरीबी उन्मूलन में महात्मा गांधी नरेगा की भूमिका

5
एन आई आर डी एवं पी आर में 59 वाँ स्थापना दिवस व्याख्यानों का आयोजन

7
एन आई आर डी एवं पी आर में ग्रामीण विकास पर 'प्रगति' राष्ट्रीय फिल्म उत्सव आयोजित

8
स्वास्थ्य, जेंडर एवं ग्रामीण विकास पर राष्ट्रीय सम्मेलन

10 एवं 11
एन आई आर डी एवं पी आर के कार्यक्रम

10
ग्रामीण युवाओं के लिए कौशल विकास पर क्षेत्रीय स्तर का टी ओ टी पाठ्यक्रम

12
एन आई आर डी एवं पी आर में आरसेटी निदेशकों का सम्मेलन

13
ओपन डाटा किट (ओ डी के) का उपयोग करते हुए क्षेत्र डाटा एकत्रीकरण पर कार्यशाला

15
सिंगापुर में प्रकाशन प्रौद्योगिकियों और नये कार्यों पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में एन आई आर डी एवं पी आर संपादक का सहभाग

16
विज्ञान फिल्म निर्माण पर कार्यशाला

गरीबी उन्मूलन में महात्मा गांधी नरेगा की भूमिका

गरीबी एक बहु-आयामी संकल्पना है जिसमें जीवन के सभी आधारित पहलू शामिल है जैसे खाद्यान्न, पोषण, आश्रय, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि। स्वतंत्रता से भारत सरकार की पंचवर्षीय योजना ने विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से गरीबी के मुद्दे को उठाया लेकिन गरीबी, देश के आर्थिक एवं सामाजिक विकास के एक मुख्य मुद्दे के रुप में अभी भी शेष है। अधिकतर निर्धनता-उन्मूलन कार्यक्रम 1960 से आरम्भ हुए जन कार्यक्रमों के माध्यम से रोजगार सृजन द्वारा आय उपलब्धता पर फोकस करते हैं। ये कार्यक्रम आपूर्ति उन्मुख थे और सरकारी विभागों द्वारा कार्यान्वित किए गए। कई मामलों में ये कार्यक्रम अल्प पारदर्शिता और जवाबदेहिता के कारण प्रभावित हुए। इसके परिणामस्वरुप, अधिकांश अकुशल मजदूरों ने गरीबी का सामना किया और रोजगार भी मौसम के अनुसार मिला । महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना 2005 की अधिसूचना, ग्रामीण गरीब को आजीविका सुरक्षा देने के लिए रोजगार सृजन के इतिहास में एक रचनात्मक बदलाव था । इसे स्वयं चयन के माध्यम से लक्षित समस्याओं से बाहर आने के लिए अधिकार-आधारित, मांग-आधारित कार्यक्रम के रुप में तैयार किया गया है । इस योजना का उद्देश्य ग्रामीण परिवार को एक वर्ष में 100 दिनों के अकुशल रोजगार की गारंटी देकर आजीविका की सुरक्षा को बढाना है । इस योजना में अनपेक्षित जोखिम को पूरा करने के साथ-साथ सामाजिक व्यवहार्यता को सुनिश्चित करने के लिए प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ,सूखा और तूफान के दौरान 150 दिनों का रोजगार प्रदान करने का प्रावधान है । यह एक अनूठा कार्यक्रम है जो न केवल रोजगार अवसरों का सृजन करता है बल्कि स्थायी ग्रामीण आजीविका के लिए स्थायी एवं उत्पादक संपत्ति का भी सृजन करता है। इस योजना ने ग्राम स्तर के विकास नियोजन के माध्यम से विकेन्द्रीकृत शासन को सुदृढ़ करने में भी सहायता की है जिसके परिणामस्वरुप ग्राम सभाओं, स्व-सहायता समूहों और सिविल सोसायटी संगठनों जैसे जमीनी स्तर की संस्थानों का सशक्तिकरण होता है ।

> **"राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान और अन्य संस्थाओं में आयोजित विभिन्न अध्ययनों से पता चलता है कि एम जी एन आर ई जी एस के कार्यान्वयन ने ग्रामीण लोगों को मौसमी गरीबी और स्थानांतरण संकट के दुष्चक्र से बाहर निकलने में सहायता की है। देश के कई भागों में, इस कार्यक्रम ने कृषि मजदूरों की वास्तविक ग्रामीण मजदूरी को सकारात्मक रुप से प्रभावित किया और उनके गांवों में उपलब्ध व्यावसायिक विकल्पों को व्यापक बनाया."**

राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान और अन्य संस्थानों द्वारा आयोजित विभिन्न अध्ययनों से यह पता चलता है कि एसजीएनआरईजीएस के कार्यान्वयन ने ग्रामीण लोगों को मौसम के दौरान गरीबी और स्थानांतरण संकट के दुष्चक्र से बाहर निकलने में सहायता की है । देश के कई भागों में, इस कार्यक्रम ने कृषि मजदूरों के लिए वास्तविक ग्रामीण मजदूरी को सकारात्मक रुप से प्रभावित किया और उनके गांवों में उपलब्ध व्यावसायिक विकल्पों को व्यापक बनाया । आज, यह कार्यक्रम कुल 25.14 अकुशल ग्रामीण श्रमिकों की तुलना में

ग्रामीण भारत के 11.1 करोड अकुशल श्रमिकों को रोजगार प्रदान कर रहा है । एम जी एन आर ई जी एस ने विशेष रुप से समय में ग्रामीण परिवारों को पूरक आय का योगदान करके ग्रामीण भारत की गरीबी को कम करने में योगदान दिया। कुछ अध्ययनों ने कुल पारिवारिक आय में एम जी एन आर ई जी एस आय के अधिक हिस्से का अवलोकन किया जो अधिक गरीब क्षेत्रों; विशेष रुप से खाद्य सुरक्षा प्राप्त करने में एम जी एन आर ई जी एस कार्यक्रम के महत्व को सूचित करता है । अत्यधिक गरीब क्षेत्रों में परिवार एम जी एन आर ई जी एस की आय का अधिकतर खर्च भोजन पर करते हैं । एम जी एन आर ई जी एस की आय उन गरीब परिवारों के लिए विशेष रुप से अकाल के समय में, खाद्य वस्तुओं की खरीद के लिए सुरक्षा तंत्र है । इसलिए जो मजदूरी वे प्राप्त करते हैं और संबंधित खर्च उनके लिए पोषण संबंधी निहितार्थ है ।

रोजगार गारंटी के अपने तत्काल लक्ष्य के अतिरिक्त, सामुदायिक संपत्ति के निर्माण, महिला और अन्य सीमान्तीकृत समूह के सशक्तिकरण द्वारा अप्रत्यक्ष रुप से आकस्मिक श्रम बाजार कार्य की स्थितियों में सुधार और पी आर आई के कार्य को प्रबल करके आजीविका की सुरक्षा के संबंध में दूरगामी प्रभाव के लिए एम जी एन आर ई जी एस तैयार किया गया था। इस प्रकार यह ग्रामीण गरीबी के अन्य आयामों से भी संबंधित है । देश के कई भागों में भी यह देखा गया है कि एम जी एन आर ई जी एस कई लोगों के लिए सामाजिक सुरक्षा का कार्य करता है विशेष रुप से उन महिलाओं के लिए जो घरों में (बुढापा, विधवा, अलगाव के कारण वंचित) रहती हैं। कुछ बुजुर्ग मजदूरों ने बताया कि उनकी उम्र के कारण उन्हें काम नही मिलेगा, जबकि एम जी नरेगा के तहत कोई आयु सीमा नहीं है । इसलिए, यह योजना कई लोगों के लिए राहत के रुप में आई है, क्योंकि इससे उन्हें परिवार के अन्य सदस्यों पर कम से कम निर्भर रहना पडता है ।

विकास योजना और श्रम बजट की तैयारी के माध्यम से एम जी एन आर ई जी एस का समग्र दृष्टिकोण इस योजना की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है । फिर भी, योजना कार्यान्वयन के स्तर पर विभिन्न कमियों से मुक्त नहीं है । उचित श्रमिक बजटिंग की कमी के चलते देश के कई भागों में कार्यक्रम कार्यान्वियन कम प्रभावी रहा है। कार्य की पहचान, कार्य की मांग की मंजूरी और कार्य के समय गरीबी एवं स्थानांतरण संकट की समस्या को दूर करने में महत्वपूर्ण क्रियाकलाप हैं । वास्तव में, कुछ पंचायतों ने ग्राम पंचायत विकास योजना (जी पी डी पी) के साथ एम जी नरेगा के श्रम बजट को एकीकृत करने के परिप्रेक्ष्य से देश में समग्र विकास योजनाओं का सृजन किया है । राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान ने एम जी नरेगा के तहत श्रम बजट की गुणता सुधारने पर फोकस करते हुए एक व्यापक क्षमता निर्माण कार्यक्रम शुरु किया है । इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्थायी विकास लक्ष्यों (एस डी जी) के स्थानीयकरण प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाना है जो इस बात पर जोर देता है कि स्थानीय सरकारें समावेशी स्थायी विकास को बढावा देने के लिए आवश्यक हैं । ग्राम पंचायत विकास योजना के साथ एम जी नरेगा के तहत श्रम बजट के एकीकरण के जनसाधारण स्तर पर सहक्रियाओं को उत्पन्न करने की अधिक संभावना है जो गरीबी उन्मूलन एवं ग्रामीण विकास से सीधे संबंध रखने वाले कई स्थायी विकास लक्ष्यों को हासिल करने में सहायता करता है ।

डॉ. ज्योतिस सत्यपालन
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
मजदूरी रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन केन्द्र
(सी डब्लू ई पी ए)

एन आई आर डी एवं पी आर में 59 वाँ स्थापना दिवस व्याख्यानों का आयोजन

दिनांक 9 नवम्बर, 2017 को एन आई आर डी एवं पी आर में राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान के स्थापना दिवस का आयोजन किया गया ।

विकास कार्यक्रमों में कार्योन्मुख पाठ्यक्रम प्रदान करने की दृष्टि से मसूरी में वर्ष 1958 में केन्द्रीय समुदाय विकास में अध्ययन और अनुसंधान संस्थान की स्थापना की गई । दिसम्बर, 1958 में देहरादून में स्थापित समुदाय विकास में अनुदेश संस्थान को समुदाय विकास के क्षेत्र में प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य सौंपा गया था । अप्रैल, 1962 में इन दोनों संस्थानों को मिलाकर राष्ट्रीय समुदाय विकास संस्थान एन आई सी डी नाम रखा गया । वर्ष 1964-65 के दौरान एन आई सी डी को हैदराबाद में स्थानांतरित किया गया । बाद में, संस्थान का नाम बदलकर राष्ट्रीय ग्रामीण विकास संस्थान (एन आई आर डी) रखा गया और फिर वर्ष 2014 में एन आई आर डी का नाम बदल कर राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान (एन आई आर डी एवं पी आर) रखा गया ।

ग्रामीण विकास में 59 वर्षों की शानदार विरासत के साथ, संस्थान ने "कौशल एवं उद्यमशीलता - परिवर्तन के लिए आगे का मार्ग" विषय पर स्थापना दिवस समारोह का आयोजन किया । इस शुभ दिन पर कौशल एवं उद्यमशीलता के क्षेत्र में व्यापक अनुभव और विशेषज्ञता वाले प्रख्यात व्यक्तियों एवं व्यावसायियों को व्याख्यान प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया गया ।

> **"9 नवम्बर को एन आई आर डी एवं पी आर ने स्थापना दिवस मनाया । स्थापना दिवस के महीने भर चलने वाले समारोह में कई क्रियाकलाप शामिल थे जैसे-व्याख्यान, सेमिनार, फिल्म समारोह, आर टी पी मेला एवं संस्थान के कर्मचारियों एवं छात्रों के लिए सांस्कृतिक और खेलकूद की प्रतियोगिताएँ इत्यादि ।"**

डॉ. डब्ल्यू.आर. रेड्डी, आई ए एस, महानिदेशक, एन आई आर डी एवं पी आर ने वक्ताओं का स्वागत किया और उन्होंने उद्घाटन भाषण में युवाओं को अपने कौशल को सुधारने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर जोर दिया जिससे उन्हें रोजगार मिलेगा ।

सुश्री संगीता रेड्डी, अपोलो हास्पिटल्स ग्रूप की संयुक्त महाप्रबंधक जो व्यापक रुप से भारत में निजी स्वास्थ्य सेवा की अग्रणी और एकीकृत स्वास्थ्य सेवा की एक प्रस्तावक के रुप जानी जाती है, इस अवसर पर प्रमुख अतिथि थी । तथापि देश में सुप्रशिक्षित कुशल श्रमशक्ति की तीव्र आवश्यकता के बारे में जानते हुए, उन्होंने अपोलो मेडस्किल की स्थापना की और अपोलो हास्पिटल्स, डी डी यू - जी के वाई एवं राष्ट्रीय कौशल विकास कार्पोरेशन के बीच साझेदारी का नेतृत्व किया जो वर्तमान में उद्देश्य - उन्मुख सार्वजनिक निजी साझेदारी के रुप में उभरा है और इसका लक्ष्य वर्ष 2020 से पहले आधे मिलियन व्यक्तियों को कुशल बनाना है । सुश्री रेड्डी ने ग्राम स्तर पर स्थानीय युवकों के लिए रोजगार सृजन का भी उल्लेख किया । उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में स्व-रोजगार के लिए नवीन अवसरों की खोज करने पर जोर दिया जिससे बेरोजगार युवक पूर्ण या अंश काल के लिए

स्वयं को व्यस्त रख सकते है । उदाहरण देते हुए उन्होंने दो लाख टेली-मेडिसिन तकनीशियों की मांग का उल्लेख किया जो दूरस्थ गांवों में चिकित्सकीय इलाज के लिए योगदान दे सकते है । सुश्री दिव्या जैन, मुख्य कार्यपालक अधिकारी, सेफजुकेट, इस अवसर पर विशेष वक्ता थी । उन्होंने कौशल क्षेत्र के अनुभवों को साझा करते हुए कौशल प्रशिक्षण वितरण पद्धति को सरल बनाने के तरीकों पर प्रकाश डाला ।

श्री नरेन्द्र कुमार श्यामसुख, संस्थापक अध्यक्ष, कम्प्यूटर लेखा संस्थान ने प्रबंधकों की नहीं बल्कि उद्यमियों की आवश्यकता पर दर्शकों को संबोधित किया । उन्होंने उद्यमियों के लिए आजकल आसानी से उपलब्ध हो रहे मुद्रा ऋण के तथ्यों पर बल दिया ।

डॉ. अच्युता सामंता, संस्थापक, कलिंग औद्योगिक प्रौद्योगिकी संस्थान (के आई आई टी) एवं कलिंग सामाजिक विज्ञान संस्थान (के आई एस एच), भुवनेश्वर, इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रुप में उपस्थित हुए ।

डॉ. अच्युता सामंता, दूरदर्शी सामाजिक वास्तुविद् है, जिन्होंने पृथ्वी की सतह से गरीबी और अन्य अतिक्रमण का उन्मूलन करने के लिए रणनीतिक रुप में शिक्षा का उपयोग कर एक सामाजिक विकास मिशन शुरु किया, आज उसी लक्ष्य की परिकल्पना वैश्विक नेताओं द्वारा की गई जो स्थायी विकास लक्ष्यों के रुप में है । वे कलिंग सामाजिक विज्ञान संस्थान (के आई एस एच), के संस्थापक है, यह 25,000 गरीब से

गरीब स्थानीय आदिवासी (अनुसूचित जनजाति) बच्चों के लिए दुनिया का सबसे बड़ा आवासीय किंडर गार्डन के रुप में स्नातकोत्तर संस्थान है और संयुक्त राष्ट्र के साथ "विशेष परामर्शी प्रतिष्ठा" संपन्न संस्थान है। डॉ. अच्युत सामंता, यू एन एफ पी ए जैसे कई संगठनों के साथ सहयोग कर शिक्षा और कौशल विकास के जरिए लगभग बीस लाख लोगों को सशक्त कर रहे हैं । फिलहाल वे "नया विचार नई कल्पना कार्यक्रम" समाजार्थिक उन्नयन को सशक्त करने के लक्ष्य के तहत विदेश में 2 शाखाओं के अलावा ओडिशा के 20 जिलों को कवर करके के आई एस एस की 20 शाखाओं और संपूर्ण देश में अन्य 20 शाखाओं की स्थापना के लिए कार्य कर रहे हैं ।

अपने मुख्य भाषण में उन्होंने सामान्य रुप में शिक्षा और विशेष रुप में व्यावसायिक शिक्षा के माध्यम से आदिवासी युवाओं को सशक्त करके कौशल और उद्यमिता पर युवाओं के साथ अपने काम करने के अनुभव को साझा किया । उन्होंने अनुभव की गई चुनौतियों और समाज के सीमान्तीकृत समूहों से आने वाले सैकडों लोगों के जीवन में उनके प्रयासों से किए गए परिवर्तनों के बारे में बात की ।

डॉ. फ्रैंकलीन लल्तीखुमॉ, आई ए एस, रजिस्ट्रार एवं निदेशक (प्रशासन), एन आई आर डी एवं पी आर, हैदराबाद ने संस्थान की 59 वर्षों की पुरानी विरासत पर विचार व्यक्त करने के पश्चात् धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ ।

स्थापना दिवस के व्याख्यानों में पडोसी संस्थानों के प्रमुख, संकाय, एन आई आर डी एवं पी आर के कर्मचारी और पी जी डी आर डी एम के छात्रों ने सहभाग किया । स्थापना दिवस के व्याख्यानों का आयोजन डॉ. ए. देबप्रिय, एसोसिएट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर अध्ययन एवं दूरस्थ शिक्षा केन्द्र और उनकी टीम ने किया ।

एन आई आर डी एवं पी आर में - ग्रामीण विकास पर 'प्रगति'- राष्ट्रीय फिल्म उत्सव आयोजित

राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान के स्थापना दिवस समारोह के भाग के रुप में विकास प्रलेखन एवं संचार केन्द्र (सी डी सी) ने 7-8 नवम्बर, 2018 को फिल्म - निर्माण पर एक कार्यशाला और ग्रामीण विकास पर 'प्रगति' एक राष्ट्रीय फिल्म उत्सव का आयोजन किया । दोनों कार्यक्रमों का लक्ष्य फिल्म - निर्माण पर पैनी दृष्टि प्रदान करना और फिल्मों के माध्यम से सूचना का प्रचार-प्रसार करना था।

7 नवम्बर, 2017 को फिल्म - निर्माण पर कार्यशाला के साथ दो-दिवसीय कार्यक्रम आरंभ हुआ । डॉ. डब्ल्यू.आर.रेड्डी, महानिदेशक, एन आई आर डी एवं पी आर ने कार्यशाला का उद्घाटन किया। कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए महानिदेशक ने मीडिया, विशेषकर दृश्य माध्यम के महत्व को उजागर किया । उन्होंने विशेषज्ञों, विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों को क्षेत्र दौरे के समय उनके अवलोकनों को दस्तावेज बनाकर तस्वीरें, वीडियो और फिल्मों के माध्यम से विभिन्न स्टेकहोल्डरों के लिए जानकारी का प्रचार-प्रसार करने का सुझाव दिया ।

डॉ. ज्ञानमुद्रा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, सी डी सी ने स्वागत भाषण दिया और कार्यक्रम के उद्देश्यों को समझाया तथा स्त्रोत व्यक्तियों से प्रतिभागियों का परिचय करवाया । डॉ. ज्ञानमुद्रा ने प्रतिभागियों से दो-दिन के इस कार्यक्रम का भरपुर लाभ उठाने का अनुरोध किया ।

फिल्म निर्माता सुश्री नीला सुब्रह्मण्यम एवं सुश्री अक्षरा सुब्रह्मण्यम दोनों कार्यशाला के स्त्रोत व्यक्ति थे । दोनों वक्ताओं द्वारा फिल्म-निर्माण तकनीकों पर प्रस्तुतीकरण और प्रस्तुतीकरण में चर्चित तकनीकों का अभ्यास करने हेतु प्रतिभागियों के लिए एक कार्य रुप में कार्यशाला समाप्त हुई । प्रतिभागियों को समूहों में विभाजित किया गया और फोटो - विशिष्ट अभ्यास किए गए । प्रतिभागियों द्वारा किए गए कार्यो पर समापण सत्र में चर्चा की गई और वक्ताओं द्वारा फीडबैंक दिया गया । अभ्यास का उद्देश्य प्रतिभागियों को

फिल्म - निर्माण की मूल बातों को सिखाना था । एन आई आर डी एवं पी आर कर्मचारी, छात्र एवं अंतर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रतिभागियों ने कार्यशाला में भाग लिया ।

दूसरे दिन अर्थात 8 नवम्बर, 2017 को 'प्रगति - ग्रामीण विकास पर एक फिल्म उत्सव' का आयोजन किया गया । फिल्म उत्सव के भाग के रुप में, देशभर ने फिल्म-निर्माताओं द्वारा प्रस्तुत कई फिल्मों को दिखाया गया । 'प्रगति' नामक यह फिल्म समारोह संस्थान द्वारा आयोजित फिल्म समारोह का दूसरा संस्करण था । इसी प्रकार के समारोह को वर्ष 2016 में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया । फिल्म समारोह में लघु फिल्म, फीचर फिल्म एवं ग्रामीण विकास से संबंधित विषयों पर वृत्तचित्रों को दिखाया गया। इस समारोह के लिए फिल्मों के मुख्य विषयों में साक्षरता एवं शिक्षा, जल, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण एवं जलवायु परिवर्तन, जेंडर मुद्दे एवं महिला सशक्तिकरण, कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र, सांप्रदायिकता - आतंकवाद, वित्तीय समावेशन, सामाजिक नवोन्मेषण एवं उद्यमशीलता, आपदा प्रबंधन, निर्धनता उन्मूलन इत्यादि सम्मिलित थे । स्क्रीनिंग के उपरांत, श्रेष्ठ फिल्मों को नकद पुरस्कार, स्मृतिचिन्ह एवं प्रमाणपत्रों से सम्मानित किया गया ।

विजेताओं की सूची

फिल्म का शीर्षक	फिल्म-निर्माताओं का नाम	पुरस्कार
आम्बया	संजय ए. धीरंगे विन्डले हाऊज प्रोडक्शन	प्रथम पुरस्कार
नो स्माल चेंज - एन्टरप्राईज	श्री पद्मावती महिला अभ्युदया संघम	द्वितीय पुरस्कार
दि हीलिंग टच	आयन माईटी	तृतीय पुरस्कार
चाईल्ड ब्राईड्स ऑफ मेनपट	अंजली नाग	प्रोत्साहन पुरस्कार
द स्कूल इन डार्कनेस	दिनेश कुमार	प्रोत्साहन पुरस्कार

स्वास्थ्य, जेंडर एवं ग्रामीण विकास पर राष्ट्रीय सम्मेलन

एन आई आर डी एवं पी आर के जेंडर अध्ययन एवं विकास केन्द्र ने 16 से 18 नवम्बर, 2017 तक एन आई आर डी एवं पी आर, हैदराबाद में आई ए एस एस एच के 15 वें वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर भारतीय समाज विज्ञान एवं स्वास्थ्य संघ (आई ए एस एस एच) के सहयोग से 'स्वास्थ्य, जेंडर एवं ग्रामीण विकास : शोध, अभ्यास एवं नीति' पर राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया।

कार्यशाला में भाग लेने वाले शोध विद्वानों के लिए 13 से 15 नवम्बर, 2017 तक 'समाज विज्ञान अनुसंधान के लिए दृष्टिकोण' पर पूर्व-सम्मेलन कार्यशाला का आयोजन किया गया था। विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं शैक्षणिक संस्थानों से लगभग 35 शोध विद्वानों ने पूर्व-सम्मेलन कार्यशाला में भाग लिया ।

अनुसंधान एवं प्रशिक्षण समन्वयन एवं नेटवर्किंग केन्द्र, एन आई आर डी एवं पी आर की प्रोफेसर एवं अध्यक्ष डॉ. ज्ञानमुद्रा ने स्वागत भाषण में उल्लेख किया कि सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में श्रेष्ठ अनुसंधान कार्य से मानव विकास

सूचकांक (एस डी आई) में सुधार होने चाहिए । महत्वपूर्ण शोध कार्यों से समाज का उद्धार होता है, सार्थक और सततयोग्य परिवर्तन का प्रवेश और कुछ मूल्य का सृजन होता है एवं लोगों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पडता है ।

डॉ. डब्ल्यू.आर. रेड्डी, आई ए एस, महानिदेशक, एन आई आर डी एवं पी आर ने अपने भाषण में बताया कि भारत में सामाजिक विज्ञान अनुसंधान के क्षेत्र में कमी है और सामाजिक विज्ञान में ज्ञान निकाय जो नीति प्रतिपादन में सहायक भूमिका निभाती है इसकी भी गंभीर कमी है । उन्होंने भारतीय संदर्भ में गुणात्मक शोध कार्य की आवश्यकता और निर्धन, अशिक्षित एवं अलाभान्वित जनता जो उनकी स्थितियों को सुधारने के लिए संसाधनों का इंतजार कर रहे है ऐसे लोगों की दुर्दशा में सुधार हेतु काम करने की आवश्यकता पर जोर दिया । उन्होंने ध्यान केन्द्रित एवं उत्साहजनक कार्यों के महत्व को बार-बार दोहराया और कहा कि किस तरह अनुसंधान समुदाय को अनपेक्षित आपात स्थितियाँ जिनसे हमारे समुदायों के कल्याण और प्रगति के लिए खतरा हो सकता है को संभालने के लिए बेहतर रुप से सुसज्जित करते हुए आगे बढना चाहिए । सामाजिक विज्ञान अनुसंधान, अनुसंधान डिजाईन और अनुसंधान समस्या का चयन, गुणात्मक एवं मात्रात्मक अनुसंधान और लेखन अनुसंधान प्रस्ताव, नीति अनुसंधान की प्रासंगिकता, मामला अध्ययन अनुप्रयोग : कैसे और क्या रिपोर्ट करे; गुणात्मक अनुसंधान पद्धतियाँ एवं माध्यमिक डाटा विश्लेषण, वैज्ञानिक पत्रिकाओं में अनुसंधान प्रपत्रों का प्रकाशन से संबंधित विषयों पर सत्र चलाए गए । आई ए एस एस एच के सदस्यों के अलावा एन आई आर डी एवं पी आर के संकाय सदस्य भी कार्यशाला में स्त्रोत व्यक्तियों के रुप में उपस्थित हुए ।

सुश्री के. सुजाता राव, भूतपूर्व सचिव, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार ने एन आई आर डी एवं पी आर परिसर के विकास सभागृह में 16 नवम्बर, 2017 को आयोजित सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में मुख्य भाषण प्रस्तुत किया । भाषण में उन्होंने दोहराया कि यदि हम शौचालय, नल का पानी, पोषण और हवादार आवासों की सुविधा प्रदान करने के निवेशों के साथ मिलकर स्वास्थ्य, शिक्षा, संचार एवं समुदाय सशक्तिकरण पर निवेश करेंगे तो अस्वस्थ्यता और बीमारियों को रोक सकते है । उन्होंने नीति उन्मुख अनुसंधान के आयोजन में सामाजिक वैज्ञानिक की भूमिका पर जोर दिया, जिससे नीतियों एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन में विद्यमान अंतरालों को जोडने में नीति-निर्माताओं और कार्यक्रम प्रबंधकों को मदद मिलेगी । उन्होंने सम्मेलन में भाग लेने वाले विशेषज्ञों एवं सम्मेलन प्रतिनिधियों से उनके अनुसंधान एवं अनुभवों से नीति निर्माण के लिए योगदान देने का अनुरोध किया ।

इस अवसर पर डॉ. डब्ल्यू.आर. रेड्डी, आई ए एस, महानिदेशक, एन आई आर डी एवं पी आर ने एन आई आर डी एवं पी आर के साथ सहयोग देने के लिए आई ए एस एस एच के प्रयासों की सराहना की । उन्होंने ग्रामीण भारत में समुदाय सदस्यों के जीवन की संपूर्ण गुणवत्ता को सुधारने हेतु स्वास्थ्य के सामाजिक सांस्कृतिक निर्धारकों को समझने के लिए साक्ष्य - आधारित नीति अनुसंधान की आवश्यकता पर जोर दिया ।

उन्होंने प्रतिभागियों को देश की आम जनता के लिए प्रभावी कार्यक्रमों एवं योजनाओं के कार्यान्वयन द्वारा देश में सततयोग्य ग्रामीण विकास हासिल करने के उनके मिशन में एन आई आर डी एवं पी आर के साथ काम करने के लिए आगे आने का सुझाव दिया ।

प्रो. शिव राजु, आई ए एस एस एच अध्यक्ष ने पिछले 15 वर्षों के लिए सहयोगी विकास एवं वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता का पता लगाया और ग्रामीण विकास प्राप्त करने के लिए विशेष रुप से ग्रामीण स्वास्थ्य के क्षेत्र में एन आई आर डी एवं पी आर के साथ सहयोग करने में गहरी रुचि दिखायी ।

प्रो. टी.वी. शेखर, महासचिव, आई ए एस एस एच ने तीन-दिवसीय सम्मेलन कार्यक्रम और विभिन्न विषयों एवं सत्रों का उल्लेख किया। सम्मेलन के दूसरे दिन दो स्मारक व्याख्यान आयोजित किए गए। 'ईज इंडिया दि होप फॉर दि ट्रबल्ड वर्ड' पर प्रो. परशुरामन, निदेशक, टाटा सामाजिक विज्ञान संस्थान द्वारा प्रोफेसर जॉन काल्डवेल स्मारक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया और डॉ. वेंकटेश श्रीनिवासन, सहायक राष्ट्र प्रतिनिधि, यू एन एफ पी ए एवं भारत ने इसकी अध्यक्षता की । इसके बाद 'एथिक्स इन पब्लिक हेल्थ रीसर्च' पर डॉ. अमर जेसानी, सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं बायो-एथिक्स के विशेषज्ञ, मुंबई द्वारा प्रोफेसर के.ई. वैध्यनाथन पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। प्रो. शिव राजु, अध्यक्ष, आई ए एस एस एच ने इस सत्र की अध्यक्षता की ।

एन आई आर डी एव पी आर के संकाय सदस्यों ने भी विभिन्न तकनीकी सत्रों एवं यूथ बेस्ट पेपर पुरस्कार प्रतियोगिता में अध्यक्षों एवं निर्णायकों के रुप में भाग लिया । संम्पूर्ण भारत से लगभग 250 प्रतिभागियों ने सम्मेलन में भाग लिया और तीन-दिवसीय सम्मेलन के दौरान विभिन्न विषयगत क्षेत्रों के तहत लगभग 200 वैज्ञानिक प्रपत्रों को प्रस्तुत किया । डॉ. सुचरिता पुजारी, सहायक प्रोफेसर, सी जी एस डी स्थानीय आयोजन संयोजक थी ।

चंडीगढ़ प्रेस सूचना ब्यूरो के पदाधिकारियों ने किया एन आई आर डी एवं पी आर का दौरा

महानिदेशक से स्मृतिचिह्न प्राप्त करते हुए एन आई आर डी एवं पी आर द्वारा आयोजित सतर्कता जागरुकता सप्ताह कार्यक्रम पर निबंध लेखन प्रतियोगिता के विजेता

एनआईआरडी एवं पीआर

ग्रामीण युवाओं के लिए कौशल विकास पर क्षेत्रीय स्तर का टी ओ टी पाठ्यक्रम

आजीविका केन्द्र (सी एफ एल), एन आई आर डी एवं पी आर ने 6 से 10 नवम्बर, 2017 तक एस आई आर डी, रांची, झारखंड में ग्रामीण युवकों के लिए कौशल विकास पर टी ओ टी पाठ्यक्रम का आयोजन किया गया। कुल 31 प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम में भाग लिया। नेहरु युवा केन्द्र संगठन (एन वाई के एस), राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन (एस आर एल एम), राज्य कौशल विकास मिशन (एस एस डी एम) एवं जिला ग्रामीण विकास एजेन्सी (डी आर डी ए) से प्रतिभागी उपस्थित हुए।

प्रथम दिवस के क्रियाकलापों में पाठ्यक्रम डिजाईन, पाठ्यक्रम की प्रेरणा, बीज मिश्रण अभ्यास के माध्यम से गतिरोध-दूर काना सम्मिलित थे और एक दूसरे को जानने के लिए परिचय अभ्यास का आयोजन डॉ. राज कुमार पम्मी, पाठ्यक्रम निदेशक एवं सहायक प्रोफेसर द्वारा किया गया। सत्र के सार में, उन्होंने भारत में युवकों के विकास हेतु कौशल एवं उद्यमशीलता विकास की भूमिका एवं आवश्यकता पर बल दिया।

एन आई आर डी एवं पी आर के संकाय सदस्यों एवं अतिथि वक्ताओं द्वारा निम्नलिखित विषयों पर वक्तव्य प्रस्तुत किया गया :

- भारत / वैश्विक परिदृश्य में ग्रामीण युवकों की जनसंख्या एवं चुनौतियाँ
- वयस्क एवं युवा आबादी की मूल अवधारणाएँ
- राष्ट्रीय कौशल विकास एवं उद्यमशीलता नीति - 2015
- युवा उद्यमशीलता एवं निरंतरता
- उत्पादक क्षमता को बढाने हेतु नीतियाँ

के कार्यक्रम

संविधान दिवस पर डॉ. डब्ल्यू.आर. रेड्डी, आई ए एस, महानिदेशक, एन आई आर डी एवं पी आर कर्मचारियों को शपथ दिलाते हुए

- डी डी यू - जी के वाई, पी एम के वी वाई एवं आरसेटी के माध्यम से ग्रामीण युवकों के लिए स्व-रोजगार अवसर
- व्याख्याताओं के फाईन ट्यूनिंग के लिए अभिनव अवसर
- उत्पादकता, मूल्य श्रृंखला एवं आय सृजन को बढावा देने में वृद्धि के लिए विपणन कौशल
- साफ्ट कौशल (सकारात्मक दृष्टिकोण और समय प्रबंधन का निर्माण)
- सहभागी टूल्स एवं तकनीक
- सहभागी प्रशिक्षण पद्धतियाँ, आदि

पाठ्यक्रम दल ने व्याख्यान सह वीडियो एवं प्रस्तुतीकरण के माध्यम से व्यक्तिगत स्वच्छता, पर्यावरणीय स्वच्छता एवं खुले में शौच से मुक्त आदि से संबंध में 'स्वच्छ भारत अभियान' पर भी सत्र चलाया । कॉटन बैग वितरण द्वारा समाज में पर्यावरण-मैत्री संस्कृति को बढाने और उसके महत्व के कारण स्वच्छ भारत जागरुकता पर प्रशिक्षण सत्र के भाग के रुप में पाठ्यक्रम में सभी प्रतिभागियों के लिए कॉटन कपडे से बने बैगों को दिया गया ।

प्रशिक्षण पद्धतियाँ

प्रशिक्षण कार्यक्रम में कई पारंपरिक और सहभागी प्रशिक्षण पद्धतियों का प्रयोग किया गया । जिसमें व्याख्यान-सह-परिचर्चा, रोल प्ले, वार्तालाप कार्यक्रम (एल एस आई ई) वीडियों फिल्म आधारित विचार-विमर्श,

फ्लैश कार्ड पद्धतियाँ, ऊर्जा, क्षेत्र-सह-प्रदर्शन दौरा, पैनल-चर्चा, मामला प्रस्तुतीकरण आदि ।

क्षेत्र-सह-प्रदर्शन दौरा

कौशल प्रशिक्षण और उद्यमिता विकास के प्रति प्रतिभागियों को प्रदर्शन के लिए आई एल एवं एफ एस - भारतीय कौशल अकादमी, रांची के लिए एक दिवसीय प्रदर्शन दौरे का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने आई एल एवं एफ एस - भारतीय कौशल अकादमी में डी डी यू - जी के वाई के अंतर्गत इलेक्ट्रिकल, प्लंबिंग, वेल्डिंग, कारपेंटर, टेलरिंग, हाऊसकीपिंग, चिकित्सा एटेंडेट, रेस्तरां स्टीवर्ड प्रशिक्षण जैसे विभिन्न कौशल विकास पाठ्यक्रमों / व्यवसायों के प्रशिक्षाथियों से और एम एस - ऑफिस, डी टी पी, अंग्रेजी वार्तालाप कौशल जैसे सॉफ्ट कौशल प्रशिक्षर्थियों से भी बातचीत की । श्री आर. विजय कुमार, टीम प्रमुख, आई एल एवं एफ एस - भारतीय कौशल अकादमी ने संस्थान की समग्र रुपरेखा और पाठ्यक्रमों को स्पष्ट किया जो डी डी यू - जी के वाई के जरिए भारत सरकार की सहायता से आई एल एवं एफ एस - भारतीय कौशल अकादमी के द्वारा झारखण्ड राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों में बेरोजगार युवाओं को प्रदान किया जाता है । क्षेत्र दौरे पर आधारित, प्रतिभागियों ने एक सामुहिक रिपोर्ट तैयार की और उसे पाठ्यक्रम टीम के समक्ष प्रस्तुत किया ।

निम्नलिखित महत्वपूर्ण अध्ययन प्रतिभागियों ने सीखे :

- कौशल प्रशिक्षण के लिए जरुरतमंद ग्रामीण युवाओं की पहचान करना
- पाठ्यक्रम तैयार करने में ज्ञान और कौशल का उन्नयन और विभिन्न कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रुपरेखा तैयार करना
- नौकरी से जुड़े प्रशिक्षण पाठ्यक्रम
- प्रशिक्षणोत्तर प्रतिभागियों की ट्रैकिंग

समापन सत्र में प्रतिभागियों ने कहा कि उन्होंने युवा और कौशल विकास के क्षेत्र में ज्ञान, कौशल और व्यवहार का उन्नयन किया है । इसके अलावा, उन्होंने आश्वासन दिया कि वे ब्लॉक-स्तर पर उनके स्थानों में जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन करेंगे। उन्होंने एन आई आर डी एवं पी आर के संकाय सदस्यों के ज्ञान एवं कौशल की सराहना भी की जिन्होंने प्रशिक्षण कार्यक्रम में सत्रों का आयोजन किया था । प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए पाठ्यक्रम टीम के अथक प्रयासों की भी सराहना की ।

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के पाठ्यक्रम टीम में डॉ. राजकुमार पम्मी सहायक प्रोफेसर तथा पाठ्यक्रम निदेशक, डॉ. यू. हेमंत कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, आजिविका केंद्र और अनिल कुमार यादव, सहायक प्रोफेसर, एस आई आर डी एवं पी आर, रांची, झारखंड शामिल थे ।

एन आई आर डी एवं पी आर में आरसेटी निदेशकों का सम्मेलन

आरसेटी निदेशकों सम्मेलन का आयोजन करना एक वार्षिक विशिष्टता है । बैंक-वार आरसेटी के निदेशकों की सभा का आयोजन विभिन्न स्थानों में विभिन्न बैंको द्वारा किया जाता है । वर्ष 2016-17 के लिए 10 से कम आरसेटी के आरसेटी निदेशकों के महा सम्मेलन का आयोजन 16 एवं 17 नवंबर 2017 को एन आई आर डी एवं पी आर , हैइराबाद में आरसेटी परियोजना टीम ने किया । सभा के उद्देश्य में आरसेटी के संचलन में नवीनतम विकासों के बारे में निदेशकों को अद्यतन जानकारी देना तथा आरसेटी द्वारा अनुसरण की गई उत्कृष्ट पद्धतियों को साझा करना था । इस सभा का उद्देश्य प्रत्येक आरसेटी के वैयक्तिक कार्य की समीक्षा करना और अगले वर्ष के लिए कार्य योजना बनाना था ।

इस सभा में बैक ऑफ महाराष्ट्र , ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स, पंजाब एंड सिंध बैंक, विजया बैंक, कारपोरेशन बैंक, आई सी आई सी आई बैंक, आर डी बी आई बैंक, कोटक महिंद्रा बैंक त्रिपुरा बैंक, मेघालय रुरल बैंक, अरुणाचल प्रदेश रुरल बैंक, मेघालय को-ऑपरेटिव ॲपेक्स बैंक और बिदर जिला सहकारी बैंक के निदेशकों और नोडल अधिकारियों ने सहभाग किया । सम्मेलन के स्त्रोत व्यक्तियों में श्री के. एन. जनार्धन, राष्ट्रीय निदेशक, आरसेटी, आरसेटी राष्ट्रीय उत्कृष्टता केन्द्र (एन ए सी ई आर), बैंगलूर, कार्यकारी निदेशक, केंद्रीय सचिवालय, रुड़सेटी, उजीरे, कर्नाटक श्री ओ. एन. बंसल, परियोजना निदेशक, आरसेटी एन आई आर डी एवं पी आर श्री ए. एस. रामय्या, सहायक प्रबंधक, सिडबी,

हैदराबाद, और श्री ए. जी . पाई. वरिष्ठ संकाय, एन ए सी ई आर, बैंगलूर, और श्री एच. एस. कृष्ण मूर्ति, पूर्व संकाय, एन ए सी ई आर, बैंगलूर ,शामिल थे ।

श्री के. एन. जनार्धन ने आरसेटी के संचलन में नवीनतम विकास, ग्रेडिंग पैरामीटर और अन्य आरसेटी द्वारा अनुसरण की गई उत्कृष्ट पद्धतियों के बारे में आरसेटी से मंत्रालय की अपेक्षा के संबंध में बात की । श्री आर. आर. सिंह ने राष्ट्रीय कौशल योग्यता ढाँचा (एन एस क्यू एफ) दिशानिर्देशों, एन एस क्यू एफ के साथ आरसेटी के पाठ्यक्रमों का संरेखण, प्रशिक्षण व्ययों की प्रतिपूर्ति करने की पद्धतियाँ, आरसेटी प्रशिक्षणियों का मूल्यांकन और प्रमाणन आरसेटी के लिए मानक संचालन प्रकियाओं के कार्यान्वयन के बारे में चर्चा की । श्री ओ. एन. बंसल ने राष्ट्रीय स्तर पर आरसेटी की अवसंरचना विकास पर एक प्रस्तुतीकरण तैयार किया और अवसंरचना पर नवीनतम दिशानिर्देशों एवं अवसंरचना के निर्माण में वैयक्तिक ढंग से आरसेटी द्वारा की गई प्रगति की समीक्षा करने के बारे में चर्चा की । श्री ए जी पई और एच. एस. कृष्ण मूर्ति ने वैयक्तिक आरसेटी द्वारा की गई प्रगति की समीक्षा की और उसे सुधारने के लिए मार्गों एवं युक्तियों का सुझाव दिया ।

डॉ. डब्लू.आर.रेड्डी, आई ए एस, महानिदेशक, एन आई आर डी एवं पी आर ने प्रतिभागियों को संबोधित किया और कहा कि ग्रामीण बेरोजगार युवाओं के कौशल निर्माण में कार्य करना आज के संदर्भ में सबसे बड़ा कार्य है। आरसेटी इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कार्य है और आरसेटी के आंकड़ों एवं आरसेटी के जरिए स्थापित लोगों की संख्या से परिलक्षित होता है। उन्होंने आगे कहा कि आरसेटी के माध्यम से कौशल क्षेत्र के जुड़ने की आवश्यकता है। सामान्य प्रशिक्षण और कौशल पर्याप्त नहीं है। कौशल व्यक्तियों का रवैया बदलना चाहिए, उनकी उत्पादकता बढ़ानी चाहिए और अधिक रोजगार के अवसरों का निर्माण करना चाहिए । इस संदर्भ में प्रशिक्षार्थियों के दीर्घकालिक स्वैच्छिक सलाह, क्षेत्रीय विशिष्ट उद्यमियों को तैयार करना महत्वपूर्ण है। आरसेटी को इस दिशा में अधिक भूमिका निभानी है ।

प्रतिभागियों को एन आई आर डी एवं पी आर के ग्रामीण प्रौद्योगिकी पार्क (आरटीपी) में अल्पकालीन दौरे के लिए ले जाया गया जहाँ श्री एम.डी. खान, वरिष्ठ सलाहकार और श्री मणि परियोजना इंजीनियर ने कम लागत वाले विभिन्न आवास प्रौद्योगिकियों और आर टी पी में उद्यमियों के प्रशिक्षण और प्रवर्तन के बारे में प्रतिभागियों को संक्षिप्त विवरण दिया गया। प्रतिभागियों को विभिन्न आवास प्रौद्योगिकियों की प्रदर्शन इकाइयों और उद्यमियों की झलक देखने को मिली। प्रतिभागियों ने इस दिशा में एनआईआरडी एवं पीआर के प्रयासों और योगदान की सराहना की।

सम्मेलन का आयोजन श्री ओ. एन. बंसल, परियोजना निदेशक, आरसेटी, एन आई आर डी एवं पी आर ने किया।

ओपन डाटा किट (ओ डी के) का उपयोग कर क्षेत्र डाटा एकत्रीकरण पर कार्यशाला

एन आई आर डी एवं पी आर, ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज में प्रशिक्षण, अनुसंधान और परामर्श का एक शीर्ष संस्थान है, जो जनसाधारण/घरेलू स्तर पर सामाजिक क्षेत्र, जी आई एस और आई टी के लिए विभिन्न क्षेत्र आधारित अनुसंधानों में शामिल है । एन आई आर डी एवं पी आर में अनुसंधान और परामर्शी परियोजनाओं को डाटा सर्वेक्षण के प्रारुपों में संग्रहित किया जाता है जिसे स्थान आधारित बहुभाषिक सर्वेक्षण प्रारुपों से बदला जा सकता है और डेटा 'ओपन डाटा किट (ओ डी के) में संग्रहित किया जा सकता हैं, मुफ्त और खुले स्रोत उपकरण का सेट है जो संगठन, लेखक, क्षेत्र की सहायता करता है और बहुभाषी इंटरफेस का उपयोग कर मोबाइल डेटा संग्रहण उपायों का प्रबंध करते हैं । संग्रहित डाटा को मशीन पर संग्रहित किया जा सकता है और बाद में जी आई एस, स्प्रेडशीट और सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर में स्पष्ट रुप से देखने एवं विश्लेषण करने के लिए किसी भी समय डाउनलोड किया जा सकता है । अनुसंधान और क्षेत्र निरीक्षणों के लिए डिजिटल क्षेत्र डाटा संग्रहण में विकास को ध्यान में रखते हुए, 2 से 4 नवंबर 2017 तक एन आई आर डी एवं पी आर, हैदराबाद में 'ओपन डाटा किट (ओ डी के)' पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया ।

मोबाइल डाटा संग्रहण उपायों को बढ़ावा देने के 'ओपन डेटा किट (ओ डी के) उपकरणों का एक मुफ्त और खुले स्रोत का संग्रहण हैं। ओ डी के उपयोगकर्ताओं के लिए आउट-ऑफ -द-बॉक्स उपाय प्रदान करता है जो

- डाटा संग्रहण काम या सर्वेक्षण करता हैं।
- मोबाइल डिवाइस पर डाटा का संग्रहण और सर्वर को प्रचलित करता हैं।
- सर्वर डाटा का संग्रहण करना और इसे उपयोगी प्रारुपों में निकालता हैं।

जी पी एस के लोकेशन और इमेज के साथ समाजार्थिक एवं स्वास्थ्य सर्वेक्षणों के अलावा, ओ डी के का उपयोग मल्टीमीडिया संपन्न फील्ड मैकिंग उपकरण प्रदान करके निर्णय लेने के लिए किया जा रहा है । ओ डी के का उपयोग प्राकृतिक संसाधन, आपदा न्यूनीकरण, सार्वजनिक स्वास्थ्य के प्रबंधन, संपत्ति/सुविधा प्रबंधन और पर्यावरणीय देखरेख से संबंधित किसी भी सर्वेक्षण में किया जा सकता है ।

डॉ. डब्लू. आर. रेड्डी, आई ए एस, महानिदेशक, एन आई आर डी एवं पी आर ने प्रतिभागियों को उत्साहवर्धक भाषण देते हुए उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई और स्रोत व्यक्तियों का स्वागत किया । कार्यशाला का आरंभ डॉ. ज्ञानमुद्रा और डॉ. माधव राव द्वारा एन आई आर डी एवं पी आर के अनुसंधान में ओ डी के परिचय के साथ हुआ । कार्यशाला के पहले दो दिन में मुख्य रुप से ओ डी के उपकरण का परिचय और प्रारुप का निर्माण, सर्वर पर अपलोड करना, मोबाइल में डाउनलोड करना, फील्ड डेटा संग्रहण, सर्वर पर संग्रहीत डाटा भेजना और विश्लेषण के लिए डाउनलोड

करना जैसे उपयोग पर ध्यान दिया गया । प्रारंभ में, प्रतिभागियों ने वैयक्तिक रुप से और बाद में प्रारुप को तैयार किया । जल्द ही, कार्य के उनके क्षेत्रों के अनुसार परिष्कृत प्रारुप अमल में होंगे । संग्रहित डाटा को प्रदर्शित किया गया और स्थानिक प्रत्यक्षीकरण के लिए खुले स्रोत क्यू जी आई एस सॉफ्टवेयर पर रखा गया। ऑफलाइन मोड में बहुभाषी प्रारुपों को तैयार करने और स्प्रेडशीट का उपयोग करके प्रारुपों को तैयार करने की पद्धति भी बनाई गयी ।

ओ एस जीओ चार्टर बैठक: 2 नवंबर 2017 की शाम को, सत्रों के पश्चात् , ओ एस जीओ के भारतीय चार्टर सदस्यों की पहली बैठक आयोजित की गयी । अध्यक्ष, ओ एस जी ओ भारत, डॉ. स्वर्णा सुब्बाराव, महासर्वेक्षक भारत (सेवानिवृत्त) और ओ एस जी ओ फाउंडेशन के अन्य चार्टर सदस्यों ने सहभाग किया जिनमें एच. के. सोलंकी, सहायक प्रोफेसर, सीगार्ड, शामिल हुए । बैठक में, ओ एस जी ओ भारत एवं उसके व्यापक क्रियाकलापों और प्रशिक्षण तथा अनुसंधान पर राष्ट्रीय एवं राज्य संगठनों के सहयोग से संबंधित कई मुद्दो पर बात की गई ।

4 नवंबर 2017 को, सी आई सी टी द्वारा उसके लैब में स्थित कंप्यूटर पर एन आई आर डी एवं पी आर सर्वर को एक रुप दिया गया । स्रोत व्यक्तियों, सी आई सी टी कर्मचारी और संकाय सदस्यो के द्वारा सर्वर का अच्छी तरह से परीक्षण किया गया । यदि एक बार सर्वर के लिए पूरी तरह से योग्य नाम बनाया जाता है और उपयोगकर्ता प्रमाणीकरण तंत्र उपयोग में लाया जाता है, तब शोधकर्ताओं तथा क्षेत्र संबंधितों द्वारा निर्बाध रुप से अपलोड किया जा सकता है ।

कार्यक्रम के स्रोत व्यक्तियों में डॉ. वेंकटेश राघवन, प्रोफेसर , ओसाका सिटी युनिवर्सिटी, जापान ; श्री रवि कुमार वुंडवल्ली, निदेशक (सेवानिवृत्त) भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण और सचिव, ओ एस जी ओ भारत; श्री नटराज, वड्डादी, चार्टर सदस्य, ओ एस जी ओ फाउंडेशन ; श्री राममूर्ति, निदेशक (सेवानिवृत्त), भारतीय भौगोलिक सर्वेक्षण एवं चार्टर सदस्य, ओ एस जी ओ फाउंडेशन; वी. बालशंकर, सहायक प्रोफेसर, आदित्य इंजीनियरिंग कॉलेज, ओ एस जी ओ फाउंडेशन; वी. बालशंकर, सहायक प्रोफेसर, आदित्य इंजीनियरिंग कॉलेज, आंध्रप्रदेश और श्री एच. के. सोलंकी, सहायक प्रोफेसर, सीगार्ड शामिल थे ।

कार्यक्रम में संकाय सदस्यों और विभिन्न केंद्रों के सहायक कर्मचारियों समेत 61 प्रतिभागियों ने भाग लिया । प्रतिभागी प्रारुपों को तैयार करने, मोबाइल डाटा संग्रहण के लिए सर्वर अपलोड करने में सक्षम हुए । डाटा का नमूना एन आई आर डी एवं पी आर के कैंपस से प्रतिभागियों ने संग्रहित किया। 4 नवंबर 2017 को सी आई सी टी के संकाय सदस्य और कर्मचारियों समेत दस प्रतिभागियों ने सत्रों में भाग लिया ।

एन आई आर डी एवं पी आर का सर्वर न केवल एन आई आर डी एवं पी आर के अनुसंधान और परियोजनाओं बल्कि एस आई आर डी / ई टी सी के क्षेत्र निरीक्षणों की जरुरतों में भी कार्य करने के लिए सक्षम है । अगले चरण में यह संबंधित संस्थानों के अनुसंधान अध्ययनों और परियोजनाओं में सहायता कर सकेगा । वास्तविक समय की मॉनिटरिंग के लिए खुले स्रोत उपकरणों का उपयोग करके वेब-जी आई एस पर डेटा भी प्रदान किया जा सकता है । सर्वर के प्रारंभिक परीक्षण के बाद, एस आई आर डी / ई टी सी के लिए कार्यशालाओं की योजना करना संभव है ।

डाटा सुरक्षा का विचार करते हुए , सर्वर से प्रारुपों को अपलोड करने एवं संग्रहित डेटा को डाउनलोड करने और अधिक विश्लेषण / उपयोग के लिए संबंधित टीम को संसूचित करने के लिए सुरक्षित यू आई डी / पासवर्ड के साथ परीक्षक के रुप में एक सी आई सी टी संकाय / स्टाफ सदस्य को पदाभिहित कर सकते हैं । अनुसंधान टीम गुणता डेटा संग्रहण पर कुछ क्षेत्र विशेषज्ञों द्वारा तैयार सर्वर के साथ ध्यान केंद्रित कर सकते हैं ।

कार्यशाला के प्रतिभागियों को ओडीके उपयोगकर्ता फोरम में शामिल होने और हजारों नौसिखियों तथा विशेषज्ञों के समान लाभ पाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है http://forum.opendatakit.org/. कार्यशाला के प्रतिभागियों के साथ आगे की चर्चाओं के लिए स्रोत व्यक्तियों द्वारा सूची बनाई गई है । इस वेब-सूची का उपयोग एन आई आर डी एवं पी आर और अनुसंधान / परियोजनाओं में ओडीके उपयोग पर प्रारंभिक चर्चा के लिए शोधकर्ताओं द्वारा किया जा सकता है ।

कार्यशाला की निरंतरता में, निम्नलिखित पहलुओं पर एन आई आर डी एवं पी आर और एस आई आर डी / ई टी सी के संकाय सदस्यों के लाभ के लिए एन आई आर डी एवं पी आर में आगे के प्रशिक्षण / कार्यशाला का आयोजन किया जा सकता है:

- संग्रहित फील्ड डेटा का उपयोग करके जी आई एस लेयर का निर्माण करना
- जी आई एस का उपयोग करके बहु विषयक डाटा विश्लेषण
- वेब पर डाटा को बाँटना
- सांख्यिकीय डाटा प्रोसेसिंग

बहु-विषयक कार्यशाला का संयोजन महानिदेशक, एन आई आर डी एवं पी आर के प्रोत्साहन से डॉ. ज्ञानमुद्रा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, सी आर टी सी एन , डॉ. वी. माधव राव, सलाहकार एवं अध्यक्ष, सीगार्ड, और डॉ. नागराजा, वरिष्ठ सदस्य, सीगार्ड के अधीन श्री एच. के. सोलंकी, सहायक प्रोफेसर, सीगार्ड ने किया ।

मोबाइल डिवाइस का उपयोग करते हुए ओडीके संग्रह डाटा को अपलोड करके किसी समुचित दिन महानिदेशक द्वारा डाटा एकत्रीकरण सर्वर का उद्घाटन करने की उम्मीद है ।

सिंगापुर में प्रकाशन प्रौद्योगिकियों ओर नये कार्यों पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में एन आई आर डी एवं पी आर के संपादक का सहभाग

14 और 15 नवंबर 2017 को सिंगापुर में आयोजित प्रौद्योगिकियों के प्रकाशन और नये कार्यों पर अंतरराट्रीय सम्मेलन, 'क्रॉसरेफ लाइव 17' में प्रलेखन एवं प्रसार केंद्र की संपादक डॉ. के. पापम्मा ने भाग लिया । इस सम्मेलन का आयोजन 'क्रॉसरेफ' ने किया था । एन आई आर डी एवं पी आर के प्रकाशन विभाग ने जर्नल सेवाओं के लिए क्रॉसरेफ को पहले ही सहयोग दिया है । संस्थान फिलहाल 'क्रॉसरेफ' से डाटा प्रयोजन पहचान (डी ओ आई) का उपयोग कर रहा है ।

यह सम्मेलन विश्व के प्रकाशकों के लिए क्षेत्र की नई प्रौद्योगिकियों और अद्यतन विकासों के प्रकाशन एवं अन्य प्रतिभागियों से निवेशों को साझा करने के लिए एक प्लैटफार्म था । चूंकि ग्रामीण विकास जर्नल (जे आर डी) ई-प्रकाशन के प्रारंभिक चरण में है , यह सम्मेलन प्रकाशन के निम्नलिखित पहलुओं को सीखने के लिए सहायक था जैसे कि :-

- डाटा प्रयोजन पहचान (डी ओ आई)
- प्रभावी कारक
- समानता का परीक्षण
- सार-संक्षेप सेवाएँ
- सूचीकरण सेवाएँ
- ओपन एक्सेस सर्विसेस
- डाटाबेस सर्विसेस
- प्रकाशनों की नैतिकता
- वैश्विक प्रकाशन और डेटाबेस के साथ नेटवर्किंग
- वेब निक्षेपण

दो दिवसीय सम्मेलन के दौरान,डॉ. के. पापम्मा ने विभिन्न देशों के कई प्रकाशकों के साथ बातचीत की । सम्मेलन में आयोजित सत्रों ने प्रकाशनों के मूल मुद्दों पर बात की । सम्मेलन में सत्रों के अलावा, क्रॉसरेफ के कार्यपालकों से बातचीत की, जर्नल प्रकाशन से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर प्रकाशनों की नैतिकता पर समिति (सी ओ पी ई) अत्यधिक सहायक रही ।

सम्मेलन में विभिन्न देशों से सरकारी वित्त पोषित और निजी रुप से वित्त पोषित दोनों जर्नलों की उत्कृष्ट कार्यों को देखने के पश्चात् यह महसूस किया है कि विषय की गुणता, प्रसंस्करण के मानकों और समय पर प्रकाशन के संदर्भो में एन आई आर डी एवं पी आर द्वारा प्रकाशित ग्रामीण विकास समीक्षा अधिकांश अंतरराष्ट्रीय जर्नलों के समतुल्य है ।

सम्मेलन के अध्ययनों के आधार पर प्रकाशन विभाग ने जर्नल की गुणता में अधिक सुधार लाने के लिए निम्नलिखित पहलुओं पर ध्यान देने का निर्णय लिया :

- ऑनलाइन प्रकाशनों के लिए (संस्थान के सभी प्रकाशनों) प्रोत्साहन देना
- क्रमश: जर्नल को पूरी तरह से संकलित ई-जर्नल में बदलना
- ई-जर्नल के लिए नया आई एस एस एन पंजीकरण प्राप्त करना
- अंतरराष्ट्रीय विद्वानों को सम्मिलित करके (अंतरराष्ट्रीय जर्नल की तर्ज पर) संपादकीय बोर्ड को प्रबल करना
- संस्थान से योगदान को प्रोत्साहित करना
- जर्नल के लिए रेफरी / समीक्षकों के एक मजबूत सेतु को विकसित करना
- विनियमित जर्नल की संख्या में वृद्धि करना

विज्ञान फिल्म निर्माण पर कार्यशाला

एन आई आर डी एवं पी आर के स्नातकोत्तर अध्ययन एवं दूरस्थ शिक्षा केंद्र ने विज्ञान प्रसार, नई दिल्ली के सहयोग से 16 से 18 नवंबर 2017 तक विज्ञान फिल्म निर्माण पर तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया । कार्यशाला में पीजीडीआरडीएम बैच-14 के कुल 54 छात्रों ने भाग लिया ।

इस कार्यशाला के प्रशिक्षको में पूरे विश्व से फिल्म निर्माण के क्षेत्र के कुछ प्रसिद्ध व्यक्ति सम्मिलित थे जैसे श्रीमती ब्रिगेट उत्तर कॉर्नेट्जकी, भारत में हाथियों के लिए स्विस एंबेसडर के रुप में जाने वाले अंतरराष्ट्रीय फिल्म निर्माता, श्री निमिश कपूर, वैज्ञानिक तथा प्रमुख, विज्ञान फिल्म अनुभाग, विज्ञान प्रसार, श्री जलाल-उद-दीन बाबा, प्रसिद्ध राष्ट्रीय लघु फिल्म-निर्माता, कश्मीर और डॉ. सय्यद कलीम निदेशक, ईएमआरसी आदि ।

कार्यशाला के अंतिम भाग में प्रतिभागियों ने इस कार्यशाला के अंतिम उत्पादन के रुप में डॉक्यूमेंटरी बनाई । इतने कम समय में कौशल को चुनने के लिए संसाधन व्यक्तियों द्वारा उनके प्रयासों की सराहना की । इन फिल्मों को भविष्य में प्रतिभागियों के लिए भेजा जाना है ।

डॉ. डब्ल्यू. आर. रेड्डी, आई ए एस, महानिदेशक, एन आई आर डी एवं पी आर ने समापन सत्र में प्रतिभागियों को और डिजिटल प्रलेखन में फिल्म निर्माण के महत्व को रेखांकित किया । उनके समापन टिप्पणियों में, उन्होंने कहा कि दृश्य-श्रव्य प्रलेखन क्रेडिट घटक और ग्रामीण विकास प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा का एक भाग बन सकता है ।

डॉ. आकांक्षा शुक्ला, एसोसिएट प्रोफेसर, स्नातकोत्तर अध्ययन एवं दूरस्थ शिक्षा केंद्र ने इस कार्यशाला का संयोजन किया । प्रोफेसर सी. एस. सिंघल, अध्यक्ष, स्नातकोत्तर अध्ययन एवं दूरस्थ शिक्षा केंद्र, डॉ. ए. देबप्रिय, एसोसिएट प्रोफेसर और डॉ. सोनल मोबार रॉय, सहायक प्रोफेसर भी इस कार्यशाला के दौरान उपस्थित थे ।

बुक पोस्ट
(मुद्रित सामग्री)

डॉ. डब्ल्यु. आर. रेड्डी, आईएएस, महानिदेशक, एनआईआरडी एवं पीआर
संपादक : डॉ. के. पापम्मा
फोटोग्राफ : पी. सुब्रमण्यम

एनआईआरडी एवं पीआर
राजेन्द्रनगर, हैदराबाद - 500 030 की ओर से
डॉ. ज्ञानमुद्रा, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, सीडीसी द्वारा प्रकाशित

हिन्दी संपादन:
अनिता पांडे
हिन्दी अनुवाद:
ई. रमेश, वी. अन्नपूर्णा, रामकृष्णा रेड्डी

मुद्रण :
वैष्णवी लेजर ग्राफिक्स, बरकतपुरा, हैदराबाद,
फोन: 040-27552178

राष्ट्रीय ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज संस्थान
ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार
राजेन्द्रनगर, हैदराबाद - 500 030
टेलीफोन : (040)-24008473, फैक्स: (040)-24008473
ई मेल: cdc.nird@gov.in, वेबसाईट : www.nird.org.in

प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण | अनुसंधान और अनुप्रयोग विकास | नीति प्रयोजन और समर्थन | प्रौद्योगिकी अंतरण | शैक्षणिक कार्यक्रम